मैडम, मेरा जवाब सही है!

मीनू पालीवाल

यह लेख बच्चों के सवालों के प्रति वयस्कों के नज़रिए के बारे में बात करता है। लेखिका भाषा और गणित की कक्षा के कुछ ठोस उदाहरण देते हुए बताती हैं कि वयस्क बच्चों के सवालों, उनके विचारों को तवज्जो नहीं देते हैं। बच्चों के सवाल उनके अनुभवों और अवलोकनों को भी बयान करते हैं। लेकिन कक्षा में इन सब की अनदेखी ही होती है। वे रेखांकित करती हैं कि सवाल पूछना सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया का स्वाभाविक और अहम हिस्सा है और कक्षा में इनकी जगह होनी ही चाहिए। सं.

कई बार बच्चे कुछ सवालों के ऐसे जवाब देते हैं जो शिक्षक के दृष्टिकोण से सही नहीं होते। शिक्षक और बच्चों के दृष्टिकोण के द्वन्द्व में जीत शिक्षक के दृष्टिकोण की होती है। मैं कई बार प्रशिक्षणों में कहती हूँ कि बच्चों ने यदि ग़लत जवाब भी दिया है तो उसे तुरन्त ग़लत करार मत दीजिए। क्या आपके अनुभव में आपने आमतौर पर ये देखा है कि ग़लती होते ही तुरन्त रोक कर सुधार करवाया जाता है? बचपन से ही हम इस सोच के आदी हो जाते हैं कि बड़े हमेशा सही बोलते हैं। उन्हें ज़्यादा पता होता है। बड़ों से वाद-विवाद करना तहज़ीब के विरुद्ध है। इस तरह की सोच से दो तरफ़ा नुक़सान होता है। एक तरफ़, बच्चे ये समझने लगते हैं कि उन्होंने सवाल सही हल किया है या नहीं, इसकी जाँच के लिए शिक्षक के पास ही जाना होगा। दूसरा, शिक्षक भी बिना बच्चों के उत्तरों पर विचार किए उन्हें ग़लत कह देते हैं क्योंकि हम बड़े हैं, हम तो बच्चों से कहीं ज़्यादा जानते हैं, यह सोच हमारे अन्दर बहुत गहरी हो जाती है।

ये सोच हम सभी के अन्दर कितनी गहराई से बस गई है और इसने सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का कितना नुक़सान किया है उसके लिए मैं कुछ उदाहरण रख रही हूँ।

उदाहरण 1

मैं कक्षा 5वीं में लोमड़ी और कछुए की कहानी सुना रही थी। कहानी में कछुआ और लोमड़ी जंगल में टहल रहे होते हैं। अचानक शेर आ जाता है। शेर को देखते ही लोमड़ी भागकर छुप जाती है, पर कछुआ भाग नहीं पाता और अपने खोल के अन्दर चला जाता है। शेर कछुए की खोल पर अपने पंजे से बार-बार वार करता है, पर कछुए की खोल पर कोई असर नहीं होता। लोमड़ी दूर से यह देख रही होती है। लोमड़ी कछुए की जान बचाने के लिए शेर के पास आती है और कहती है कि अरे शेर साहब, इस जानवर का खोल बहुत मोटा है आप इसे पानी में डाल दीजिए, थोड़ी देर में खोल नरम हो जाएगा, फिर आप आराम से इसे खा लीजिएगा। शेर मान जाता है और जैसे ही कछुए को पानी में डालता है, कछुआ जल्दी से तैरकर दूर निकल जाता है।

इस कहानी के बाद मैंने बच्चों से प्रश्न पूछा। कछुए को शेर से बचाने का और क्या तरीक़ा हो

सकता था? एक बच्चा बोला कि मैडम, लोमड़ी शेर के पास जाती और कहती कि अरे, यह कोई खाने की चीज़ थोड़ी न है, यह तो खेलने की चीज़ है। चलो, हम इससे खेलते हैं। बच्चे के इस उत्तर पर मैंने कहा कि अरे, यह कैसा उत्तर है। यदि लोमड़ी शेर से इतनी देर बातचीत करेगी तो वो लोमड़ी को ही खा जाएगा। इतना ही नहीं, मैंने कक्षा के बच्चों से पूछा कि शेर लोमड़ी को खा जाएगा या नहीं? सभी बच्चे बोले, हाँ, खा जाएगा। अब सवाल ही ऐसा पूछा था मैंने, जिसमें उत्तर 'हाँ' ही स्वीकारा जाएगा। बच्चे शिक्षक के सवाल पूछने के तरीक़े से ही समझ जाते हैं कि कहाँ 'हाँ' बोलना है कहाँ 'नहीं'।

अब यदि ध्यान दिया जाए तो आप देख सकते हैं कि जो कहानी मैंने सुनाई थी उसमें भी लोमड़ी शेर से बातचीत करती है और कछुए को पानी में डालने का सुझाव देती है। कहानी में भी लोमड़ी शेर से बातचीत कर रही है! इसके बावजूद मैंने बच्चे को 'उसका उत्तर ग़लत है' कहा और उसके लिए अपना तर्क भी दिया। काश, कक्षा में कोई बच्चा खड़ा होकर कहता कि मैडम, कहानी में भी तो लोमड़ी शेर से बात कर रही है तो मेरे दोस्त का उत्तर ग़लत कैसे हो सकता है? काश, हम बड़े, बच्चों को 'बड़ों की बात मानें' पर ज़ोर देने की बजाय सुनी और पढ़ी गई बातों को बिना विचारे स्वीकार नहीं करने के लिए कहते आए होते और बच्चों में उनका अपना तर्क रखने का आत्मविश्वास जगा पाते!

स्कूल से लौटने के बाद मेरे मन में ऊपर लिखी बातें आईं और मुझे बच्चे के उत्तर को ग़लत करार देने पर ग्लानि हुई। यह क़िस्सा जो मेरे साथ हुआ, ऐसा बहुत-से मौक़ों पर कई और शिक्षकों व बच्चों के साथ ज़रूर होता होगा। हमें इसके प्रति सचेत रहने की ज़रूरत है।

उदाहरण 2

परीक्षा पत्र में 5 पालतू जानवरों के नाम लिखने को कहा गया था। एक बच्ची ने पालतू जानवरों के नाम में बिल्ली लिखा था। शिक्षिका ने उससे कहा कि बिल्ली पालतू जानवर में नहीं आती और बात वहीं ख़त्म हो गई। किसी बच्चे ने यह भी नहीं पूछा कि बिल्ली पालतू जानवर क्यों नहीं है? वह बच्ची चुप हो गई और अपनी बग़ल में बैठी दोस्त से बोली कि मेरे पास तो घर में बिल्ली है। बच्चे अपने परिवेश और अनुभव के आधार पर उत्तर देते हैं। हम बच्चों को शिक्षा के द्वारा सोचना सिखा रहे हैं। और यह हम अच्छी तरह जानते हैं कि अपने अनुभव से बिलकुल अलग विषयवस्तु के द्वारा सीखना सम्भव नहीं है। हमें यहाँ बच्ची को अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर दिए गए उत्तर पर प्रोत्साहित करना चाहिए और उससे पूछना चाहिए कि उसे क्यों लगता है कि बिल्ली एक पालतू जानवर है। इससे उस बच्ची को अपनी बात के लिए तर्क देने का मौक़ा मिलेगा। जब बच्ची अपने तर्क देगी तो कक्षा के दूसरे बच्चे उन तर्कों को सही मानते हैं या ग़लत, इसपर चिन्तन होगा और यह असल मायने में सीखना हो रहा होगा क्योंकि हमारा उद्देश्य केवल पालतू जानवरों के नाम याद करवाना नहीं है। लेकिन दुःख की बात है कि परीक्षा में प्रश्न यही आता है कि 4 पालतू जानवरों के नाम लिखिए। हमें सचेत रहना होगा कि पालतू जानवर सिर्फ़ एक विषयवस्तु है, जिसके द्वारा हम बच्चों में तर्क, सम्प्रेषण, अनुमान और सुनने के कौशल का विकास करना चाहते हैं। हमें कक्षा प्रक्रिया को हमेशा शिक्षा के लक्ष्यों के साथ जोड़कर देखने की ज़रूरत है। हमें लोकतंत्र में ऐसे नागरिक चाहिए जो अपना स्वतंत्र मत बना पाएँ। यदि कक्षा में शिक्षक द्वारा दिए गए उत्तर को अन्तिम उत्तर के तौर पर बच्चों द्वारा स्वीकारने की पद्धति लागू रहेगी तो हम कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि आगे चलकर हमारे बच्चे एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में योगदान दे पाएँगे।

उदाहरण 3

परीक्षा पत्र में 5 पालतू जानवरों के नाम लिखने को कहा गया था। एक बच्ची ने उसके

उत्तर में मछली लिखा। शिक्षिका ने उससे कहा कि मछली पालतू जानवर नहीं होती। शिक्षिका ने अपना तर्क दिया कि मेरे घर में भी कछुआ है, परन्तु मछली, कछुआ ये पालतू जानवर की श्रेणी में नहीं आते क्योंकि ये ज़िन्दा रहने के लिए इंसानों पर निर्भर नहीं हैं। गाय और कुत्ता, इनको अगर जंगल में छोड़ देंगे तो ये जानवर मर जाएँगे। ये जानवर अपने जीवन के लिए मनुष्यों पर निर्भर होते हैं इसीलिए इनको पालतू जानवर कहते हैं।

शिक्षिका ने अपने उत्तर के लिए तर्क दिया, ये अच्छी बात है। एक नज़रिए से बात सही भी लगती है, परन्तु तर्क पर और सोच-विचार करने की ज़रूरत है। मैं भी सोचती हूँ कि लोग घर में एक्वेरियम (aquarium) क्यों रखते हैं। न तो मछलियाँ आवाज़ निकालती हैं, न हमारी तरफ़ देखती हैं। हाँ, सुन्दर ज़रूर दिखती हैं। पर सुन्दर सजावट की वस्तु तो और भी बहुत कुछ हो सकती हैं, फिर जीवित चीज़ क्यों रखना जिसको खिलाना पड़े, पानी बदलने का काम करना पड़े।

हमारे समाज में 'बड़े लोग सब जानते हैं' यह सोच गहरी है, जिसमें यदि वह व्यक्ति शिक्षक है तो फिर उसे सब पता होना ही चाहिए। इसी वजह से शिक्षकों की या समाज में उम्र में बड़े लोगों की ज्ञान सत्ता स्थापित हुई है और उसपर सवाल करने को बदतमीज़ी समझा जाता है। यह सोच दो तरफ़ा नुक़सान करती है। बच्चे, बड़ों की बातों पर प्रश्न नहीं करते और बड़े, बच्चों द्वारा किए गए प्रश्नों पर विचार नहीं करते। बच्चों के प्रश्नों के उत्तर न पता होना एक शर्मिन्दगी की बात समझी जाती है और इससे बचने के लिए हम बड़े कई बार कई तरीक़े भी अपनाते हैं, जैसे– अभी तुम नहीं समझ पाओगे, आगे की कक्षा में इस बात को पढ़ेंगे, ये कैसा अजीब सवाल है, अभी समय नहीं है, या सवालों पर ध्यान ही नहीं देना, उन्हें दरकिनार करना। हमें अब इस सोच पर भी काम करना है कि शिक्षक इस बात को स्वयं भी और बच्चों के सामने भी सहज रूप से स्वीकार करें कि ज़रूरी नहीं है कि उन्हें (शिक्षक) हर सवाल का जवाब पता हो। ऐसे प्रश्न जिनके उत्तर शिक्षक को भी नहीं पता, उनपर शिक्षक ये प्रति-उत्तर दे सकें कि इस प्रश्न का उत्तर तो मुझे भी नहीं पता! चलो, हम सब मिलकर इसका उत्तर ढूँढ़ते हैं। इस प्रक्रिया को आम सहमति में लाना होगा।

कक्षा के बाद

मैंने मैडम से कहा कि मुझे लगता है मछली और कछुआ भी पालतू जानवर हो सकते हैं। हम बाज़ार में पालतू जानवर की दुकान (पेट शॉप) में मछली देखते हैं। आपने अपने कछुए के बारे में बताया था कि जब आप कुछ दिन घर पर नहीं होते और बाद में लौटते हैं तो कछुआ ज़ोर-ज़ोर से कुछ आवाज़ निकालता है। इसका मतलब शायद वो आपके लौटने पर ख़ुश हो रहा होता होगा। आपने पालतू जानवर होने की जो परिभाषा दी, उसके मुताबिक़ बहुत-से जानवर, जैसे– घोड़ा, मछली, आदि, पालतू जानवर नहीं रह जाते। पर आमतौर पर मछली और घोड़ों को पालतू जानवर माना जाता है। मुझे लगता है कि पालतू जानवर की परिभाषा शायद यह हो सकती है, "जिन जानवरों को इंसान अपने साहचर्य (companionship) और मनोरंजन के लिए रखता है वो पालतू जानवर होते हैं।"

उदाहरण 4

बच्चों की ग़लतियाँ भी शिक्षक के लिए सवाल हैं। आइए, गणित के एक उदाहरण से इसको समझते हैं।

अगले पेज के चित्र 1 में बच्चे ने जोड़ के 4 सवाल हल किए हैं। आप देख सकते हैं कि 4 में से 3 सवाल एकदम सही हल किए गए हैं। परन्तु बच्चा कितना समझा है, यह आपको ग़लत किए गए सवाल को देखकर पता चलता है। बातचीत की प्रक्रिया, जो किया जा रहा है वह क्यों किया जा रहा है, इसकी स्पष्टता न होना किस हद तक बच्चे को बिना सोचे-समझे शिक्षक द्वारा

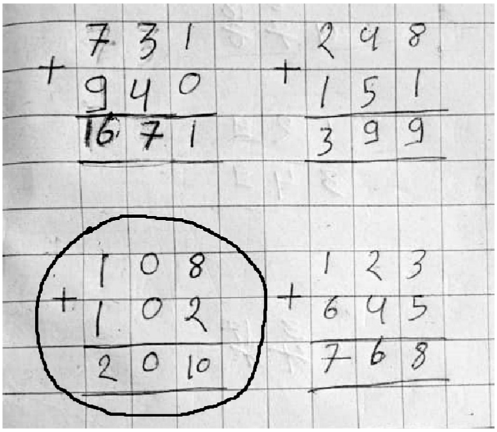

चित्र 1

बताए निर्देश को तकनीकी तौर पर करते रहने के लिए बाध्य करता है, वह हम चित्र 2 देखकर समझ सकते हैं। चित्र 1 में यदि बच्चा यह पूछ पाता कि 8 और 2 को जोड़कर जब 10 आता है फिर 1 बाजू वाली लाइन में क्यों लिखते हैं। और इसका जवाब सिर्फ़ ये न दिया जाता कि 1 दहाई है इसलिए उसको दहाई के स्थान पर लिखना है। यदि हम कॉपी पर और साथ-साथ तीली बण्डल या डाइन (dienes) ब्लॉक के साथ में जोड़ कर रहे होंगे तब हमें बच्चों को यह बताने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी कि 1 दहाई के स्थान पर क्यों लिखा जा रहा है।

तीली बण्डल या डाइन ब्लॉक के साथ जब बच्चा काम कर रहा होगा तब उसे दहाई का

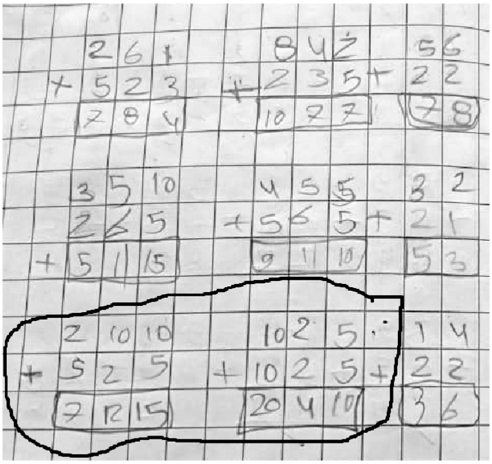

चित्र 2

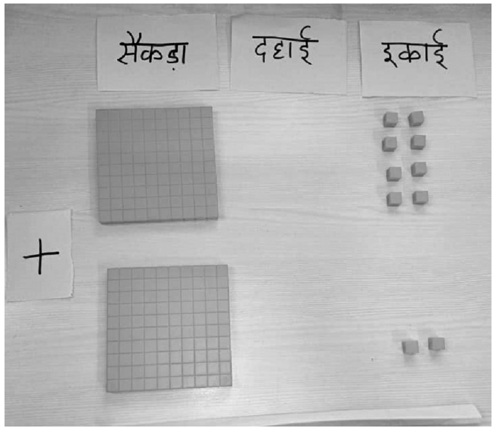

चित्र 3

स्थान ख़ाली दिखाई देगा और संख्या में उस जगह शून्य दिखेगा। इसी प्रकार, दहाई के स्थान पर 1 क्यों लिखा है यह बच्चा देख पाएगा। बच्चे को संख्या समझने में मदद मिलेगी। चित्र 3 और 4 देखकर बच्चे को समझ आएगा कि 108 का 1, 100 को दर्शाता है और 210 का 1, 10 को दर्शाता है।

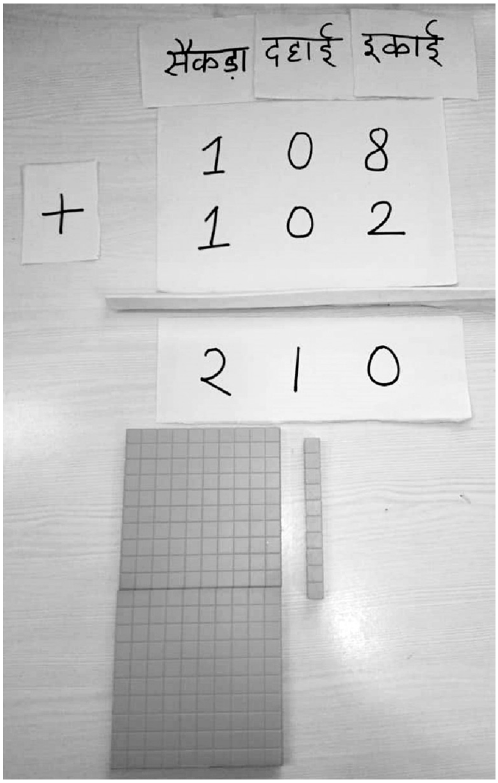

चित्र 4

समेकन

कक्षा में यदि शिक्षक के द्वारा सिर्फ़ निर्देश दिए जाएँगे और उनके पालन की अपेक्षा की जाएगी तो बच्चों में प्रश्न पूछने का कौशल विकसित नहीं हो पाएगा।

हमें बच्चों को हमारी कही गई बातों पर सोचने का आग्रह करना चाहिए बजाय कि उन्हें सही मान लेने का। आख़िरकार, हम शिक्षा के द्वारा विचार करना ही तो सीख रहे हैं। ऊपर वाली बातचीत में यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि मछली पालतू जानवर है या नहीं। महत्त्वपूर्ण यह है कि पालतू जानवर के लिए हमें कौन-से पैमाने रखने की ज़रूरत है। फिर कौन-कौन से जानवर उन पैमानों में इस पार या उस पार होते हैं। पैमाने बनाने की प्रक्रिया, विभिन्न जानवरों की उन पैमानों पर तुलना करना और फिर निर्णय लेना कि फ़लाँ जानवर पालतू है या नहीं। ये पूरी प्रक्रिया असल में शिक्षा है। विषयवस्तु कुछ और भी हो सकती है, जैसे– हम ये निर्णय कैसे लेंगे क्या जीवित है, क्या मृत। यदि हमने पैमाना बनाया कि जीवित चीज़ें गति करती हैं तब पेड़ तो मृत वस्तु हो जाएँगे। इसीलिए सिर्फ़ अन्तिम उत्तर महत्त्वपूर्ण नहीं है। उत्तर तक पहुँचने की प्रक्रिया ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है, और उसके लिए बातचीत बहुत महत्त्वपूर्ण है।

मीनू पालीवाल अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में 2017 से काम कर रही हैं। आप फ़ेलोशिप प्रोग्राम के ज़रिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ीं। इससे पहले उन्होंने 6 वर्ष आईसीआईसीआई बैंक में काम किया। वे अपने मन में आने वाले सवालों की तलाश में शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ीं। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के साथ काम करना उन्हें अच्छा लगता है।

सम्पर्क : meenu.paliwal@azimpremjifoundation.org